SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 04

- Unit – II : Topic
  - A. **औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच**

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच

मराठी रंगमंच – सन् 1843 ई0 में विष्णुदास भावे द्वारा रचित सीता स्वयंवर को पहला आधुनिक मराठी नाटक का गौरव प्राप्त है। महाराष्ट्र में अण्णा साहेब किर्लोस्कर की किर्लोस्कर नाटक मंडली प्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक नाट्य–मंडली थी। 31 अक्तूबर, 1880 ई0 को इस नाट्य मंडली ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् के मराठी रूपांतरण का अभिमंचन करके नियमित रंगकर्म की शुरूआत की। मराठी रंगमंच को नई चेतना से जोड़कर पुनर्जीवित करने का ऐतिहासिक कार्य विजय तेंदुलकर ने किया। खामोश अदालत जारी है, गिद्ध, सखाराम बाइंडर, घासीराम कोतवाल, कमला, जात ही पूछो साधु की, कन्यादान, जैसे आक्रामक विवादास्पद किंतु नाटकों के द्वारा तेंदुलकर ने मराठी के प्रयोगधर्मी रंगमच को अत्यधिक प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त चित्रयं खानोलकर (एक शून्य बाजीराव), वी. वी. शिरवाडकर 'नट सम्राट, अच्यत वझे चल मेरे कद्दी ठुम्मक ठुम), सतीश आलेकर 'महानिर्वाण), जयवंत दलवी 'बैरिस्टर, संध्याछाया), महेश एल्कुंचवार ' होली, रक्त पुष्प, वाड़ा चिरेबंदी/विरासत, आत्मकथा प्रतिबिम्ब) तथा गोविन्द देशपांडे (उध्वस्त धर्मशाला, आंधर यात्रा/चक्रव्यूह सत्यशोधक/रास्ते) जैसे नाटककारों ने मराठी रंगमंच की उन्नति प्रदान की। विजया मेहता, जब्बार पटेल, स्व. अरविन्द देशपांडे, श्रीरामलागू, कमलाकर सारं, अमोल पालेकर, सत्यदेव दुबे, पुरूषोत्तम वेदे, जयदेव हट्टगड़ी, वामन केन्द्र जैसे पुरानी – नई पीढ़ी के अनेक निर्देशकों – अभिनेताओं का नाम मराठी रंगमंच में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। देशपाण्डे एवं बसंत कानेटकर ने नाटकों के व्यवसायीकरण में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

पंजाबी उर्दू रंगमंच – पंजाबी उर्दू रंगमंच में क्षेत्रीयता और भाषाई सीमाओं को तोड़कर बाहर निकलने वालों में शीला भाटिया, गुरूशरण सिंह, बलवंत गार्गी, परितोष गार्गी, करतार सिंह डुग्गल, शन्नो खुराना, नीलम मानसिंह चौधरी, हरचरण सिंह, केवल विद्रोही और नाटककार–निर्देशक सी.डी. सिद्धू का रंगकर्म इस बीच काफी चर्चित हुआ है।

तमिल रंगमंच – दक्षिण भारत में आधुनिक रंगमंच की परंपरा न तो उतनी आधुनिक ही है और न उतनी समृद्ध ही। 19वीं सदी के अंत तक तमिलनाडु में अभिनीत नाटकों का स्तर इतना नीचा था कि भद्र परिवार के माता–पिता अपने परिवार के किसी सदस्य को नाटक देखने की स्वतंत्रता नहीं देते थे। प्रदर्शनों के समय सब लोगों का। नाटकों की कथावस्तु प्रायः घिसी–पिटी पौराणिक होती थी। हरिश्चन्द्र, रामनाटक, सावित्री–सत्यवान् और द्रौपदी–वस्त्रहरण आदि का अभिनय ही बार–बार होता था। आज से साठ वर्ष पूर्व तक तमिल रंगमंच इसी हीन अवस्था में था। न नाटक अच्छे थे, न प्रयोक्ता और न उनका रंगमंचीय संगठन ही।

तमिल रंगमंच के उद्धार के लिए अव्यवसायी शिक्षित नाट्य–मंडलियां बीसवीं सदी के आरंभ से ही प्रयत्नशील हैं। सन् 1890 ई0 में वेल्लारी के कृष्णमाचारी ने सरस विनोदिनी सभा की स्थापना की। धीरे–धीरे शिक्षित जनों का ध्यान इधर आकर्षित हुआ। इन्होंने पी. एस. मुदालियर के नेतृत्व में सगुणविलास सभा की स्थापना की। गत अर्द्धशतक से तमिल रंगमंच के विकास की दिशा में उन्होंने ऐतिहासिक महत्त्व का प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त म्यूजियम थियेटर, कन्हैया एण्ड कंपनी तथा बाल–विनोद नाटक सभा जैसी संस्थाएं भी रंगमंच के उत्थान के

लिए खुली। इन सभाओं द्वारा तमिल रंगमंच का स्तर उन्नत हुआ और नाटकों के अभिनय ने भी नया स्वरूप और शक्ति प्राप्त की। इन शौकिया नाट्य–मंडलियों के प्रयत्न से ही व्यावसायिक नाट्य–कंपनियों की असंभ्रान्तता एवं अन्य त्रुटियॉ धीरे–धीरे दूर हो सकीं।

तेलगू रंगमंच – आधुनिक तेलगू रंगमंच का जन्म उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण में हुआ। चित्रनलीयम् पहला तेलगू नाटक था जिसका प्रदर्शन आंध्र नाटक पितामह लेखक–अभिनेता कृष्णमाचार्य ने प्रस्तुत किया था। इन्होंने लगभग तीस नाटक प्रस्तुत किए, जिनमें शाड़्र्गधर, प्रह्लाद और अजामिल मुख्य हैं। इसी के आसपास श्रीनिवास राव ने भी रामराज, शीलादित्य और कालिदास का प्रदर्शन वेलारी में किया। वस्तुतः वेलारी तमिल रंगमंच की जन्मभूमि है। सन् 1890 के बाद तो महान् तेलगू अभिनेताओं के नाम से अनेक नाटक–कंपनियॉ भी खुलीं।

राजमनर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के नाट्य–लेखक हैं। सन् 1930–40 ई0 के बीच मधुकृष्ण के 'अशोकम' चलम का चित्रांगी और शशांक कविराजु का शंबुक–वध और खूनी का अभिनय हुआ, परंतु पौराणिक कथाओं को नए परिवेश में प्रस्तुत किया गया। स्वाधीनता के उपरांत आंध्र में कई नाटक–मंडलियां काम कर रही हैं और एकांकी नाटक और रेडियो–रूपकों की रचना बड़ी तेजी से हो रही है। आंध्र नाटक कला परिषद्, (1929 ई0) तेलगू लिटल थियेटर और आंध्र थियेटर फेडरेशन नामक संस्थाऍ नाट्य–प्रदर्शन और रंगमंच को लोकप्रिय बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। फिर भी तेलगू में अभी ऐसे नाटकों का अभाव है, जिनका अभिनय पूरे दो घंटे तक हो सके।

कन्नड़ नाटक और रंगमंच – कन्नड़ नाटक और रंगमंच की स्थिति भी भिन्न नहीं रही है। सन् 1878 ई0 से 1884 ई0 के बीच कर्नाटक में हालासानी नाटक कंपनी, तांतुपुरास्था थियट्रीकल कम्पनी, श्री चमराजेन्द्र कर्नाटक सभा, दि मैट्रोपॉलिटन थियेट्रिकल कम्पनी तथा गुब्बी चेनाबाकवेश्वर क्रिपापोशिता नाटक संघ जैसी व्यावसायिक नाट्य संस्थाएं अस्तित्व में आ चुकी थीं। इनमें से गुब्बी कम्पनी अब भी सक्रिय है। परंतु इन परंपरागत दलों और इनके नाटकों से भिन्न आधुनिक समाज और उसकी समस्याओं से प्रभावित कन्नड़ में नए नाटक की शुरूआत करने का श्रेय 1918 ई0 में प्रकाशित टी.पी. केलाराम के नाटक को दिया जाता है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में पद्य और गीति नाटकों की दृष्टि से के. एस. कारंत तथा सामाजिक समस्याओं के चित्रण की दृष्टि से ए. एन. कृष्णराव के अतिरिक्त श्रीकण्ठप्प, गोविन्दपाई तथा के. वी. पुटप्पा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सुप्रसिद्ध रचनाकार के शिवराम कारंत अपने संगीत और नृत्य नाटकों के कारण चर्चा का विषय बने। बहुविध प्रयोगधर्मी श्रेष्ठ नाटकों का भी विशेष योगदान है। आजादी के बाद उभरनेवाली नई पीढ़ी के नाटककारों एवं नाटकों में गिरीश कर्नाड (ययाति, तुगलक, हयवदन, नागमंडल और शक्त कल्याण/तलेदण्ड), लंकेश (क्रांति, परते और संक्रांति) तथा चन्द्रशेखर कम्बार (जो कुमार स्वामी, ऋषिश्रृंगा और श्री सम्पिगे) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। साथ ही, नाटक निर्देशकों में कारंत, के वी सुबण्णा, प्रसन्ना, नागेश, स्व. शंकरनाग और अक्षर इत्यादि के नाम प्रमुख हैं।

मलयालम रंगमंच – नाट्यकला के सभी देशी रूपों में कथकली केरल के लोकजीवन की आकांक्षा और भावनाओं का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि है। कत्थकली की कला जितनी सूक्ष्म और जटिल है उतनी ही विशुद्ध भी। रचना, काव्य, गीत–वाद्य–नृत्य का योग और आंगिक भावभंगिमाएँ सब मिलकर कत्थकली को पूर्णता प्रदान करती है। इसमें परम्परागत, पौराणिक एवं लौकिक कथावस्तुओं का ग्रन्थन भावभूमि के रूप में होता है। मलयालम् नाटकों द्वारा रंगमंच के माध्यम से सामाजिक समस्याओं के समाधान की खोज की गयी है। कन्निकर एम. पद्मनाथपिल्लई और एम. कुमार पिल्लई ने अपने नाटकों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त प्रदान की। इनके नाट्य प्रयोगों में सामाजिक समस्याओं का प्रस्तुतीकरण बड़ा ही मर्मस्पर्शी हुआ है।

केरल की पारंपरिक रंगरूढ़ियों के मौलिक रचनात्मक प्रयोग से अपनी अनूठी रंगशैली उपलब्ध कराके पणिक्कर ने मध्यम व्यायोग, देवत्तार, अवनवन कटम्पा, करीमकुट्टी, दूतावाक्यम्, उस्भंगम मत्तविलास और शाकुंतलम जैसे संस्कृत एवं मलयालम के श्रेष्ठ प्रदर्शनों के जरिए भारतीय रंगमंच में अपनी खास पहचान और जगह बनाई है।

संदर्भ– सूची

1. लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, रंगमंच लोकधर्मी–नाट्यधर्मी, 1992, के.एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद

2. मखमूरसईदी अनीज आजमी, उर्दू थियेटर, 2006 राष्ट्रीय नाट्य अकादमी, दिल्ली